Rakta dhvaja

PK
2098
R358
1920

Rakta dhwaja

अब बह रही है गङ्गा, खेतों को देलो पानो।
कुछ कर लो नवजवानो, जायेगी नवजवानी॥

लेखक—'अज्ञात'

[मूल्य 1+)

PK
2098
R358
1920

पात्र-परिचय ।

पुरुष पात्रः—

रवि, केदार, शेर, मदन, गौरी, बाबाजी } देशोद्धार के लिये व्याकुल क्रांतिकारी युवक ।

सरदार—क्रान्तिकारियों का मुखिया ।

किसान—एक दुःखी किसान, पीछे क्रान्तिकारी युवक ।

श्याम—किसान का पुत्र ।

गोपालदास—इन्सपेक्टर सी० आई० डी० ।

श्रीमूर्ति—क्रान्तिकारियों का सन्देश-वाहक ।

बलराम—एक दुखी बालक, पीछे क्रान्तिकारियों का सहायक ।

स्त्री पात्र :—

तारा—किसान की स्त्री, श्याम की माता ।

गङ्गा—गोपालदास की स्त्री, बलराम की माता, कामिनि, भारत माता, श्रीकृष्ण, पुलिस, युवकगण इत्यादि ।

* भारत मातायनमः *

नवजवानों वार करने के लिये तैयार हो।
भाई लुटते हैं तुम्हारे नींद से बेदार हो।!

❀ सन्तप्त हृदय की वेदना ❀

——::*❀*::——

बचपन के उस सुखमय जीवन की कल्पना करते ही हृदय गद्गदसा हो जाता है! क्या ही सुखमय वे दिन थे! न किसीबात की चिन्ता, न किसीबात की फिक्र! माता की गोद में अनेकों प्रकार के किलोल करना, अपनी मधुर हंसीसे सबके चित्त को अह्लादित करना, यही तो नित्य का काम था। पृथ्वी पर अपने छोटे छोटे पैरों को घसीटते हुए चलते थे। जहां कहीं थोड़ी सी धूल अथवा कोयला मिलता था, बस फौरन मुंहमें डाल कर मां को दिखाने मागते थे। मां देख कर हंस पड़ती थी। कोमल स्नेहासिक्त वचनों में डांटकर गाल पर हलका सा एक चपत लगाती थी। आह! कितना आनन्द था! उस चपत में वात्सल्य की धारा बरसती थी। मधु से भी मीठा था वह चपता आज उसकी कल्पना करते ही हृदय एक अव्यक्त वेदना से परिपूर्ण हो जाता है। जब बाहर धूल में खेल कर सारे शरीर को धूल में लपेट कर मां की गोद में आकर लिपट जाते थे उस समय प्रेम से माता उस धूल से भरे हुए मुखको चुम लेती थी। कितना मधुमय था वह चुम्बन! माता का समस्त ाम, सारा वात्सल्य उस एक चुम्बन में आकर केन्द्रीभूत हो जाता था

इसी प्रकार अनेकों प्रकार की क्रीड़ा करते हुए, माता पिता और परिजनों के प्रेम का लाभ उठाते हुए वह बचपन बीतता था। आज वे दिन क्या हुए ? आज सब स्वप्न सा प्रतीत होता है। सब अतीत के अतल गर्भ में समा गया। अब हम उन दिनों की केवल कल्पना मात्र कर सकते हैं। कल्पना में भी क्या आनन्द है ! कुछ क्षणों के लिये तो ऐसा हो जाता है मानों हम उसी अवस्था में उन्ही आनन्दों का उपभोग कर रहे हों : परन्तु जब हम अपनी उस तन्द्रा से जागते हैं तो हृदय उन दिनों की याद करके व्याथा से पूर्ण हो जाता है। हृदय यही कहने लगता है कि बचपन ! आह ! क्या एक बार फिर बचपन के वे सुहावने दिन देखने को न मिलेंगे ? परन्तु हमारे हृदयतल की यह आवाज़ हृदय की दीवारों से टकरा कर प्रतिध्वनित होती है और हृदय के अन्यतम प्रदेशों में ही विलीन हो जाती है।

उस समय सभी लोग खुश रखने की चेष्टा करते थे। अनेकों प्रकार की बातें कह कर हंसाने की चेष्टा करते थे। एक एक हंसी पर चुम्बनों के बौछर होते थे। आह ! प्रेम के उस अत्याचार में कितना आनन्द था ! आज भी उस मधुर स्निग्ध आनन्द की कल्पना करते ही हृदय उन्मत्त हो जाता है। जिसकी कल्पनामात्र में इतना आनन्द है, ऐसा मधुर उन्माद है, तो जब वह प्रत्यक्षी-भूत थी उस समय कितना आनन्द रहा होगा ! परन्तु नहीं, किसी वस्तु के महत्व को हम तभी जानते हैं जब हम उसे खो देते हैं। बचपन के उस आनन्द को भी हम आज उसे खो कर ही जानते हैं। आज हम कहते हैं कि बचपन ! तुम्हारा वह आनन्द कहां गया ? क्या एक बार फिर अपने वे सुखमय दिन नहीं दिखलाओगे ? कहां वे चिन्ताओं में लीन हो कर दुखपूर्ण परिस्थितिओं में पड़े हुए हैं !

बचपन ! बचपन ! जरा सी तो अपनी वह झलक दिखलाओ ! जवानी से हम प्रार्थना करते हैं—

दो दिन को ऐ जवानी, दे दे उधार बचपन !

हां, बस दो दिन को, केवल दो दिन को ! बस दो दिन के लिये वह सुखमय बचपन मिल जाता तो और किसी चीज़ की ख़ाहिश नहीं थी। परन्तु क्या बचपन के उन दिनों का आना सम्भव है ? नहीं, अब तो हम उन दिनों का केवल स्वप्न ही देखा करें ! उन दिनों की कल्पना ही करके चित्त को सन्तोष दिया करें !

इसी प्रकार आज जब भारत बासी अपनी उस चिरपरिचित स्वाधिनता को खो बैठे हैं तभी उस खोई हुई वस्तु के महत्व को समझ सके हैं। आज हम जब स्वाधीनता के उन सुखमय दिनों की कल्पना करते हैं तो हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। चित्त उत्साह और आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है। परन्तु दूसरे ही क्षण, जब हमें अपनी वर्त्तमान परतंत्रता का ख्याल आता है तो हृदय व्यथा से भर जाता है और हम सोचते हैं कि क्या फिर भी स्वाधीनता के वे सुखमय दिन देखने को मिलेंगे ? परन्तु हमारी यह आवाज़ भी उसी प्रकार हमारे हृदय-देश में ही विलीन हो जाती है ! आज वे दिन स्वप्न के समान प्रतीत होते हैं। आज हम परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़े हुए कहते हैं कि आह ! एक वे भी दिन थे जब हम स्वाधीन थे ! जब माता (भारतमाता) की उस सुखद, स्नेहशीतल छाया में स्वाधीनता पूर्वक, स्वच्छन्दता पूर्वक किलोल करते थे। कोई हमारे स्वाधीन जीवन पर आलोचना करने वाला नहीं था। परन्तु आज वे दिन भी बचपन ही की तरह विलीन हो गये। अतीत के अतल गर्भ में समा गये ! आज तो हम

केवल उन दिनों की कल्पना करने ही के अधिकारी हैं।

बचपन बीत गया। दूसरी ही अवस्था का प्रादुर्भाव हुआ। हृदय सांसारिक बातों को धीरे धीरे समझने लगा। माता से अनेकों कहानियां सुनीं। पुस्तकों में अनेकों प्रेम की कहानियां पढ़ीं। प्रेम में उन्मत्त होकर फ़रहाद ने क्या क्या दुख सहे! अन्त में प्रेम में नैराश्य होने के कारण उसे अपने प्राणों को भी छोड़ना पड़ा। उस प्राण-त्याग में अपूर्व शक्ति थी। उस आत्म-त्याग में, प्रेम की बलिवेदी की उस बलि में एक अजीब जादू था। शीरीं उन्मत्त होकर दौड़ी और फ़रहाद की कब्र पर पहुंची। प्रकृति ने सहायता दी। शीरीं ने प्रेमी की मृत देह का आलिङ्गन किया। दोनों सर्वदा के लिये एक होकर अनन्त में विलीन हो गये। प्रेम के प्रत्यक्ष उदाहरण भी देखे। दीपक के प्रेम में उन्मत्त होकर परवाने को जल जाते हुए देखा। प्रेम का कैसा अनुपम उदाहरण है!

उसी प्रकार देखते हैं कि आज अपनी खोई हुई आजादी के प्रेम में उन्मत्त कितने ही भारतीय युवक हंसते हंसते फांसी पर लटक रहे हैं धन्य है उनका जीवन! क्या मादरे हिन्द के सभी लोगों में प्रेम के ऐसे ही उन्मत्त भाव उत्पन्न होंगे? क्या देशके सभी युवक फ़रहाद की तरह आजादी के लिये दीवाने होकर देश-प्रेम की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर हंसते २ अपने प्राणों की आहुति चढ़ायेंगे? क्या हमारे देश के नवयुवकों में भी परवाने की तरह अजादी के लिये मर मिटने की शक्ति उत्पन्न होगी? यदि यह सम्भव है तो क्या यह सम्भव नहीं कि आजादी भी शीरीं की तरह अपने लिये मरनेवाले से आलिङ्गन करने को दौड़े? संसार में असम्भव कुछ भी नहीं है। हमारे युवकों के हृदय में इन उन्मत्त भावों का सञ्चार तो

हो, फिर वह दिन दूर नहीं होगा जब हम आजादी को अपना दरवाजा खटखटाते हुए देखेंगे।

"एक गुलाम"

❀ रक्त-ध्वज ❀

अंक १—दृश्य १

स्थान—महल का रास्ता।

(दो बालक हाथ में रक्त-ध्वज (लाल झण्डा) लिये हुए आते हैं)

बालक — जय, जय, जय रक्त-ध्वज, रक्त-ध्वज प्यारे।
भारत उद्धार करन दीनन दुख टारे ॥जय०॥

लखि के तोहिं मोद होत,
हिय में आमोद होत।
साहस—सञ्चार होत,
शक्ति देन हारे ॥ जय० ॥
निर्धन तव आस करत,
दुख रो रो परकास करत।
अब भी आय करो सहाय,
रक्त-ध्वज वारे ॥ जय० ॥
'व्यथित' मातु कहे पुकार,
दुख में नहिं कोइ हमार।
रक्त—ध्वज ही लखात,
बन्धन उद्धारे ॥ जय० ॥
अब तो बढ़ चलहु बीर,
हिय में धरि शान्ति, धीर।

भारत आजाद करहु,
रक्त—ध्वज धारे ॥
जय, जय, जय रक्त-ध्वज, रक्त-ध्वज प्यारे ॥

(गाते हुए जाते हैं। सूत्रधार और नटी का प्रवेश)

सूत्रधार—प्रिये, आज तो रङ्गशाला में अपार जन-समूह एकत्र हुआ है। दर्शकों की अपार भीड़ इनकी नाट्य-रस-प्रियता को प्रकट कर रही है। आज इनके मनोरञ्जन के लिये कौन सा नाटक दिखाया जाय ?

नटी—प्राणनाथ, यह स्वाधीनता का युग है। आज हजारों नवयुवक अपनी अपनी रस-लीला को छोड़ कर आजादी को प्राप्त करने की चेष्टा में अपने प्राणों की आहुति चढ़ा रहे हैं। इतना जानते हुए भी ये नवयुवक इस विलास में निमग्न होकर किसी रसपूर्ण नाटक को देखने की आशा से यहां आये होंगे। परन्तु नहीं, इनका हृदय अन्धकार से परिपूर्ण है। माता की करुण दशा को ये लोग नहीं देख सकते। अथवा इनके आमोद-प्रिय हृदय को, इनकी मधुभीनी आंखों को इतना अवसर ही नहीं मिलता कि ये अपने देश की दयनीय दशा की ओर दृष्टिपात कर सकें। अतएव इनके विलास-प्रिय हृदय में वीरत्व का सञ्चार करने के लिये, इनके मुर्दादिलों में जिन्दादिली का बीज बोने के लिये कोई देश-भक्ति पूर्ण नाटक दिखलाइये। आज भारतीय किसानों पर दरिद्रता और पाश-विकता का जो प्रहार हो रहा है, आज भारतीय नवयुवकों पर जो भीषण अत्याचार हो रहा है, शृङ्खलाबद्ध भारत माता की आज जो करुणा पूर्ण स्थिति है, उसका करुण चित्र इन विलासी युवकों के सामने खींचिये, जिससे कि—

बिलख बिलख कर रो उठे सारा रसिक समाज।
पारतन्त्र के दलन को प्रस्तुत हों ये आज॥

सूत्रधार—क्यों प्रिये, तुमने इतना बड़ा लेक्चर तो दे डाला परन्तु यह नहीं बतलाया कि भारत में आज क्या हो रहा है, किसानोंपर कैसा अत्याचार हो रहा है, अथवा भारतमाता की स्थिति क्यों शोक-पूर्ण हो रही है ?

नटी—ऊफ्! इन मनुष्यों में भी कब मनुष्यता आवेगी ? ये भी कब मर्द कहे जाने योग्य होंगे ? अरे, आज देशकी करुणाजनक स्थितिने हम स्त्रियों तक के हृदय को कम्पित कर दिया है। आज भारत की वीराङ्गनायें माता का दुख न देख सकने के कारण, अपनी स्वाभाविक लज्जाको त्यागकर, परदेके पाशको तोड़कर आजादी को प्राप्त करने के लिये स्वाधीनताके समरक्षेत्रमें अवतीर्ण हो रही हैं। आज भारत की कितनी ही महिलायें स्वातन्त्र्य-प्रेमके अपराधमें पाशविकताके पंजेमें फंसकर जेलकी यातनाओंको सहन कर रही हैं। फिर भी इन मनुष्योंके कानों तक जूं नहीं रेंगती। अब भी वे पूछते हैं कि भारत में क्या हो रहा है।

सूत्रधार—(हंसकर) शान्त हो, प्रिये, तुम्हारे मनोगत भावों का अध्ययन करने के लिये ही मैंने तुम से यह प्रश्न किया था। परन्तु तुम स्त्रियों को इतना महत्व देकर पुरुषोंको नीचे गिरा रही हो, यह तुम्हारी भूल है। देखो अभी हाल ही में भगतसिंह सुखदेव और राजगुरु जैसे होनहार युवक भारत की आजादीके लिये हंसते २ फांसी के तख्तों पर चढ़ गये। स्वाधीनता का पुजारी चन्द्रशेखर

प्रसन्न मन से पुलिस की गोलियों का शिकार हो गया। बालक हरोकिशन निरंकुश नौकरशाही का कोप-भाजन हुआ। त्यागवीर पण्डित मोतीलाल आजादी के लिये लड़ते हुए अमरत्व को प्राप्त हुए। वीर जवाहर, सरदार पटेल, महामना मालवीय जी और देश के उज्ज्वल रत्न महात्मा गान्धी जैसे योद्धा आज भी भारतीय स्वतन्त्रता के लिये प्राणार्पण से चेष्टा कर रहे हैं। इतना होते हुए भी हमारे नवयुवकों में विशेष जागृति नहीं है, इसका भी एक कारण है। वह कारण है साहित्य की कमी। आज हमें आधुनिक समयका उपयुक्त साहित्य नहीं मिलता जिससे हमारे विचार बदलें और हमारे हृदय में भी देशप्रेम की सरिता प्रवाहित हो। इस स्वाधीनता के युग में भी हमारे लेखक प्रेमिक और प्रेमिका के पत्र व्यवहारों में ही अपने समय और लेखनशक्ति को नष्ट कर रहे हैं। आज भी हमारे कवि मानिनी-मान-मोचन में ही अपनी कवित्व शक्ति का परिचय दे रहे हैं। अरे, इन धुरन्धर लेखकों और कवि सम्राटों की लेखनियां किस दिन काम आवेंगी? प्रिये, जब वह साहित्य ही नहीं है तो फिर हम क्या दिखा कर इन नवयुवकों के हृदय में देशभक्ति की गङ्गा प्रवाहित करें? क्या तुम जानती हो प्रिये, तुम्हारे मनोनुकूल कोई नाटक प्रस्तुत हुआ है?

नटी—प्राणनाथ, आपका कहना यथार्थ है कि हमें ऐसा साहित्य ही नहीं मिलता जिससे हमारे निर्बल हृदय में भी वीरता का सञ्चार हो सके। परन्तु सन्तोष की बात है कि लेखकों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो रहा है। अभी हाल ही का लिखा हुआ "रक्त-ध्वज"

नाम का एक नाटक प्रकाशित हुआ है। लेखक ने उसमें अपनी कुशल लेखनी द्वारा भारत की वर्तमान दशा का ऐसा करुण चित्र खींचा है कि पढ़ते २ आंखों से आंसू गिरने लगती है। भारतीय किसानों की दुर्दशा को पढ़ कर हृदय विचलित हो जाता है। स्वाधीनता के लिये पागल नवयुवकों की बातचीत को पढ़कर मन उत्साह से परिपूर्ण हो जाता है मुझे विश्वास है कि उस नाटक को देखकर इन नवयुवकों का हृदय भी उबाल खायेगा और ये भी आज़ादी की प्राप्ति के लिये कमर कस कर तैयार होंगे।

सूत्रधार—तो चलो, आज वही नाटक दिखाने का आयोजन किया जाय।

(गाते हुए प्रस्थान)

दोनों— उठहु वीर अब करहु समर तैयारी।
रक्षित होवे जिससे भारत महतारी॥
है बहुत दिवस तक कष्ट उठाया हमने.
सब मान और सम्मान गंवाया हमने।
पुरुखों की सब शान मिटाया हमने,
लांछित-जीवन का लाभ उठाया हमने।
उठि तोरहु अब दासत्व पाश दुखकारी।
रक्षित होवे जिससे भारत महतारी॥ १॥
अत्याचारों को नित ही हम हैं सहते,
पशुबल के कष्टप्रद घातों को सहते।
सहते सब कुछ हम मौन हमेशा रहते,
इन कष्टों का प्रतिकार नहीं कुछ करते।

उठि दलहु शत्रु मंडल जो है कुविचारी ।
रक्षित होवे जिससे भारत महतारी ॥ २॥

इस समय मौन रहना है नहीं सुहाता ।
है 'व्यथित' जिस समय पीड़ित भारतमाता ॥
जननी का दुःख नहीं अब देखा जाता ।
कहती है रो रो, सुनलो, भारतमाता ।

उठु लाल, काट दासत्व-रजनि, अंधियारी ।
रक्षित होवे जिससे भारत महतारी ॥ 3 ॥

(प्रस्थान)

अङ्क १—दृश्य २

स्थान—घर का भीतरी भाग ।

(एक तरफ एक कोनेमें एक टूटी फूटी खाट पर क्षुधा से पीड़ित बालक पड़ा हुआ छटपटा रहा है दूसरे कोनेमें उसका पिता बैठा हुआ पश्चाताप कर रहा है ।)

किसान—(स्वगत) हा, इस कुसमय में क्या करूँ ? किसे बुलाऊँ ? किसे पुकारूँ ? कौन मेरी सहायता करेगा ? दीनबन्धो ! इस करुण जनक स्थिति में बिना आपके कौन मेरी सहायता करेगा ? कौन इस अभागे के दुःखपूर्ण आर्तनाद से द्रवित होकर वायुवेग से आ सकता है ? नाथ रक्षा करो बचाओ ? ऐसी दारुण स्थिति में डालने के बदले मेरी इस जीवन-लीला ही को समाप्त कर दो, इस

पतित जीवन से क्या लाभ ? हा ! कौन ऐसा पिता होगा जो अपनी एकमात्र सन्तान को मरते देखकर इस दारुण, असह्य दुःख को सह सकेगा। आह, मेरा एकमात्र पुत्र, मेरा जीवन-आधार मेरा प्राण-प्यारा श्याम आज भूखों मर रहा है। क्षुधासे पीड़ित होकर वह भोजन भोजन चिल्ला रहा है। आज दो दिन हुए उसे भोजन नहीं मिला है उसका गुलाब सा चेहरा सूख गया है। शरीर पीला पड़ गया है। क्षुधासे मृतक तुल्य होकर, शक्तिहीन होकर वह वहां उस कोनेमें पड़ा है। प्रभो बचाओ, मेरे उस लाड़ले को बचाओ। इस दारुण विपत्ति से हमारा उद्धार करो। मधुसूधन आओ, आओ, ...

("पिता, पिता" की क्षीण आवाज सुनाई देती है किसान चौंकता है)

किसान—(जोर से) वह देखो, वह देखो ! मेरा श्याम 'पिता, पिता' कह कर पुकार रहा है। वह भूखसे विह्वल होगया है। आवाज शिथिल पड़ गई है। कंठ रुँध गया है। हाय, उसे क्या खाने को दूँ ? कैसे धीरज बँधाऊँ ? ज़र गया, जेवर गया और जमीन भी गई। घर की एक एक वस्तु निरंकुश नौकरशाहीके कुत्ते उठा ले गये। अब पासमें इस टूटी झोपड़ी के सिवा और कुछ भी नहीं रह गया है। इस पर भी आंख लगी हुई है। सत्यानाश हो ऐसे राजा का। हाय, अब इस भूखे बालकको क्या कहकर सान्त्वना दूँ। कलेजा फटा जाता है। हृदय शोक, सन्ताप एवं प्रतिशोध से क्षुब्ध हो रहा है। ओफ, इस वक्त मेरे ऊपर आपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा है। हे नाथ, भक्तवत्सल ! अब इस अधमरे सन्तान की रक्षा

तुम्हारे बिना कौन कर सकता है ? हा ! वह देखो, वह भयङ्कर काल सा कौन आता है ? वह मृत्यु का फन्दा लिये हुए यमदूत सा कौन दिखाई देता है ? बचाओ नाथ ! ब····ब···चा····ओ····

(मूर्छित होकर गिरता है पटाच्छेप)

अङ्क १—दृश्य ३

(स्थान—एक मनोहर निकुञ्ज का मध्य भाग)

समय सन्ध्या ।

(सुन्दर तृणाच्छादित भूमि पर बैठे हुए युवक बात चीत कर रहे हैं)

रवि— जीवन केवल स्वप्न है, शरीर क्षणभंगुर है, संसार मिथ्या है ।

केदार—हां पर आत्मा अमर है, अजर है और अनश्वर है ।

रवि — जब यह शरीर नाशमान है, जब यह जीवन केवल मधुर है सुषुप्ति ही है, और जब आत्मा सांसारिक वासनाओं से अलिप्त है तो फिर मनुष्य क्षणिक आनन्द के लिये अपने ही देश वासियों पर पाशविक अत्याचार करके क्यों अधर्म कमाता है ! उनका खून चूस चूस कर स्वार्थ की रङ्गभूमि को क्यों रक्त रञ्जित करता है ? देश द्रोही होकर अपने मस्तक पर कलङ्क का टीका क्यों लगाता है ? परमेश्वर यह तुम्हारी कैसी अद्भुत लीला है !

(दुःख पूर्वक सिर नीचा कर लेता है)

केदार—शान्त, भाई शान्त ! इस प्रकार क्षुब्ध क्यों होते हो ? यह उनका दोष नहीं है, यह·····

— हां यह अन्याय का सबक सिखाने वाले, अधर्म का पाठ पढ़ानेवाले दुराचारी, अत्याचारी, हिंसक और हमारे भाइयों के खून के प्यासे "पाशविक शासन" का फल है। अन्यायी शासन ने उनके आत्म गौरव को, कर्तव्याकर्तव्य की विवेचन शक्ति को नष्ट कर दिया है। उनके नेत्रों पर स्वाथ का चश्मा लगा हुआ है जिससे उन्हें केवल धन ही दिखाई देता है। इसके लिये घृणित से घृणित कार्य करने को प्रस्तुत रहते हैं।

न—तो क्या इसमें उनका दोष नहीं।

ाह—नहीं, कदापि नहीं।

व— फिर दोषी कौन है ?

ार—यदि किसी राज्य की प्रजा अधोगति को प्राप्त होकर दुराचारी हो जाये, यदि वह पतन निम्नतम श्रेणी पर पहुंच जाय तो उसके इस पतन का उत्तरदायी वह प्रजा नहीं होगी बल्कि होगा वह राजा जिसकी ये प्रजा है इसी प्रकार शिष्य के पतन का उत्तरदायी वह गुरू होगा जिसका वह शिष्य है, पुत्र के पतन का उत्तरदायी उसका पिता होगा।

न—हैं हैं। यह तुम क्या कह रहे हो ?

ार—ठीक ही कह रहा हूं क्या आज कलके राजा ऐसे नहीं हैं जो अपनी प्यारी प्रजा पर अत्याचार करते हों ? क्या स्वार्थ के वशीभूत होकर पिता उसकी सन्तान की हत्या नहीं करता ? क्या दुराचारी पापी वासना के क्रीट शिक्षक अपने पुत्र तुल्य शिष्यों को कुमार्ग गामी नहीं बनाते हैं ? क्या वे अपनी कुत्सित प्रवृत्तियों को

चरितार्थ करनेके लिये उसके विमल चरित्र को नष्ट करके अपने मुख पर कालिमा नहीं लगाते ? भाई वह जमाना गया, वे दिन गुजर गये जब पसीने के हरएक कतरों से खुशबू निकलती थी। अब तो मनो इत्र मलने पर भी रूहसे मुहब्बत की बू नहीं आती।

शेर— बिलकुल ठीक। और वहीं ऐसे दुराचारियों को जिन्दा दरगोर कर दिया जाय तो कुछ पाप नहीं है। यदि ऐसे गुरूको जीते जी चिता में भस्म कर दिया जाय तो अधर्म नहीं।

मदन—भाई, जो हो। आज्ञा का अनुगामी होना ही प्रजा, पुत्र एवं शिष्य का धर्म है। आप अपने कर्तव्य पर अटल रहिये।

केदार—हां मैं मानता हूं कि कर्म ही हमारा धर्म है परन्तु धर्म की आड़ में जान बूझकर कुत्सित कार्यों का सम्पादन घोर पाप है। अधर्म है अन्याय है। और है दुराचार,

यह सत्य है आदेश-पालग ही हमारा धर्म है।
पर साथ ही अन्याय करना भी महा दुष्कर्म है॥
यदि धर्म की खातिर हमें करने पड़ें दुष्कर्म हा।
तो फूंकदो उस धर्म को वह धर्म पाप अधर्म है॥

रवि—मतलब यह कि आप लोग शान्ति के नहीं बल्कि क्रान्ति के उपासक हैं।

शेर—यह कुछ अंशों में सत्य हो सकता है।

रवि—परन्तु आप लोग महात्माजी के खिलाफ जा रहे हैं।

शेर—हरगिज नहीं आप पिनक रहे हैं।

रवि—कैसे ?

केदार—क्या आपने प्राचीन इतिहास का अध्ययन नहीं किया है ? क्या दुराचारी अत्याचारी दुष्ट रावण के नाश के लिये घृणित घोर हिंसक राक्षस वंश के विनाश के लिये, दलित देश की रक्षा के लिये, पतित जाति के उत्थान के लिये, जननी जन्मभूमि को अत्याचार पाश से छुड़ाने के लिये, शान्ति प्रिय पुरुषोत्तम राम को रावण के विरुद्ध शस्त्र धारण करना नहीं पड़ा था ? क्या हाथ में बंशी धारण करने वाले सुकुमार श्याम को अत्याचारी कंस के पाप भार से पृथ्वी की रक्षा करने के लिये चक्र सुदर्शन नहीं उठाना पड़ा था ? इसी प्रकार पापी और दुराचारी के चंगुल से सद्गुण एवं सद्धर्म को छुड़ाने के लिये क्या शान्ति स्वरूप धर्मात्मा पाण्डवों को कौरवों के विरुद्ध महात्मा शिवाजी एवं व्रती प्रताप को मुगलों के विरुद्ध तलवार नहीं ग्रहण करनी पड़ी थी ? शमशीर नहीं उठानी पड़ी थी ?

मदन—आप का कहना यथार्थ है .....पर

केदार—हां हां कहो। सतर्क क्यों हो ?

मदन—यही कि शान्ति और क्रान्ति में सहयोग और असहयोग में हिंसा और अहिंसा में आकास पाताल का अन्तर है। जमीन और आसमान का फरक है। दोनों के मार्ग भिन्न २ हैं और दोनों में दो विश्व छिपे हुए है।

शेर— पर मैं जहां तक समझता हूं यह देशोद्धार के लिये पैनी कटार है। दोनों में फरक जरूर है दोनों के मार्ग भी भिन्न हैं पर उद्देश्य एक है। साधना की चरम सीमा एक है और दोनों की कामना एक है।

रवि— गर्म लोहा को ठण्डा लोहा ही शान्त कर देता है, दवा देता है।

केदार—पर सीधो उंगली से घी नहीं निकलता।

मदन—अच्छा अब समय ज्यादा हुआ। नौ बज रहे हैं। अब चलना चाहिये।

शेर— अरे नौ बज रहे हैं! चलो चलो, जल्दी चलो।

(बातें करते हुए सभीका प्रस्थान, एक स्त्री का अपने पुत्र सहित प्रवेश)

स्त्री—मेरे लाल! चुप रहो. धीरज धरो, मेरे नयनों के तारे, मेरे हृदय के टुकड़े, इस अभागिनी के अवलम्ब, मत रो! तेरा रोना सुनकर मेरा कलेजा टुकड़े २ हुआ जाता। हृदय फटा जाता। धीरज धर मेरे कन्हैया! आंसू के बून्द न टपका मेरे लाल!

(गोद में लेकर आंसू पोंछती है)

बालक--मां, बहुत भूख लगी है। अब नहीं सहा जाता। आंखों के आगे अन्धेरा छाया जाता है।

स्त्री-- हा, इस बालक को धीरज कसे बंधाऊं? इसे क्या खाने को दूं? (बालक से) बेटा! धीरज धरो इस विपत्ति में वही अशरण शरण दीनबन्धु भगवान हमारी सहायता करेंगे। वही हम दीनों की गुहार सुनेंगे।

बालक—मां, भगवान कहां है? क्या वे हमारी सहायता करेंगे? मां, मां बहुत भूख लगी है। क्या भगवान हमें रोटी खाने को देंगे?

स्त्री—आह, भोले बालक, भगवन् अब नहीं सहा जाता। जीवन प्रदीप का तेल चुक गया है। हाय, इस निरीह की क्या दशा हो गई है. इस

निर्दोष बालक ने कौन सा अपराध किया है जिसको ऐसी दारुण दशा दे रहे हो। क्षमा करना देव ! अब नहीं सहा जाता। जीवन नौका जर्जर हो गई है। हृदय टुकड़े २ हो चुका है। जी डूब जाता है। बचाना ·····बचाना·····भगवन् ·····मेरे·····लाल···को ·· बचाना·····

(बेहोश होकर गिरना और मृत्यु)

बालक—मां, मां, मां ! अरे क्या हुआ ? अब क्या करूं ? हाय, मां कहती थी कि भगवन् हमारी सहायता करेंगे। हाय भगवन्, कहां हो ? आओ, आओ ! हमारी इस हालत पर तरस खाओ, आओ हमारी सहायता करो, भगवन !

(वृन्दावन में भगवान श्रीकृष्ण राधिका के साथ बिहार करते हुए दिखाई देते हैं। बालक की पुकार उनके कानों तक पहुंचती है। वे फौरन वंशी फेंक कर वहां से भागते हैं। उनका पीला दुपट्टा और मुकुट रास्ते ही में गिर जाते हैं। परन्तु उन्हें उनकी सुध नहीं है, वे बालक के पास शीघ्रातिशीघ्र पहुंचने के लिये व्याकुल हैं। बालक की अन्तिम पुकार पर एक कड़ाके की आवाज के साथ परदा फटता है। भगवान श्रीकृष्ण हाथ उठा कर आशीर्वाद देते हुए दिखाई देते हैं। (बालक चौंकता है)

श्रीकृष्ण—धन्य रे विश्वास ! इसी भोले विश्वास का तो मैं वेदाम का गुलाम हूं। धीरज धरो बेटा ! दुःखनिशा अब दूर हुआ चाहती है। तुम्हारी माता अब इस संसार में नहीं रही। जाओ वत्स, अभी अभी कुछ युवक इधर से गये हैं। वे मातृभूमि के उद्धार की

चेष्टा में लगे हुए हैं। जाओ और उनकी उद्देश्यपूर्ति में सहायता दो। तुम्हारा कल्याण होगा।

(बालक सिर झुकाता है भगवान श्रीकृष्ण उसके मस्तक पर हाथ रखते हैं। परदा गिरता है)

अङ्क १-दृश्य ४

स्थान—बन का रास्ता।

(सन्यासी के वेष में शोकाकुल किसान का प्रवेश)

किसान—हा ! भगवन् ! इतना दुःख किस कारण से दे रहे हो पूर्वजन्म के किस पाप का इतना भीषण दंड दे रहे हो। हा मेरा एक मात्र ही पुत्र था। भूख से तड़पता हुआ उसे छोड़ कर आया था। सोचा था शायद उसे आंखों से ओट करके शान्ति प्राप्ति कर सकूगां। परन्तु नहीं, मुझे शान्ति नहीं मिली, साधारण भेष त्याग कर सन्यासी का भेष धारण किया। शान्ति की प्राप्ति के लिये परमात्मा के चरणों में चित्त लगाने की चेष्टा की परन्तु सब व्यर्थ। मुझसे नहीं रहा गया। हा मुझसे अपने उस कलेजे के टुकड़े, प्यारे श्याम को देखे बिना नहीं रहा गया। छिपे २ उसे देखने गया। जाकर देखता हूं कि उसकी माता छाती पीट पीट कर रो रही है। कुटिया में अन्धेरा छाया हुआ है। चिराग गुल हो गया है। हा मैंने दूर से उसकी लाश देखी थी। उसकी

आँख खुली हुई थी। मालूम होता था वह दीन दृष्टि से मेरी तरफ देख रहा है। मुझे देख कर बहुत भय हुआ। और मै भागा हुआ यहां तक आया। हाय मेरा प्यारा श्याम भूख से छटपटा कर मर गया। घर से इसलिये भागा था कि शांन्ति मिलेगी परन्तु शान्ति मिलना तो दूर रहा शान्त समय में मैं अपने श्याम को देख भी न सका! हा अब वह श्याम कहां? अब उसका सलोना मुंह देखने को कहां मिलेगा? अब भी चित्त नहीं मानता। वहीं जाने का मन करता है। जहां श्याम अपनी आँख खोले हुए पड़ा है। हा वह क्या है। प्रभो मेरे हृदय में शान्ति नहीं ज्वाला धधक रही है। कलेजा भस्म हुआ जाता है वह देखो? श्याम दौड़ता हुआ आरहा है। बेचारा भूख से व्याकुल है। शरीर शिथिल हो गया है। हाय वह देखो ठोकर खाकर गिर पड़ा, रो रहा है (चौक कर) ऊफ? कहां श्याम और कहा उसका रोना भगवान बचाओ, बचाओ हृदय फटा जाता है। बचाओ नाथ मुझे चक्कर आरहा है, मै गिरा गि.....गि.....गिरा

(मुर्छित होकर गिरना एक युवक का आकर उसके सर में अपने कुरते से हवा देना परदा गिरना)

अङ्क १—दृश्य ५

स्थान—विद्यालय का फाटक।

(युवक छात्र आपस में बातचीत कर रहे हैं)

गौरी—नहीं नहीं। कदापि नहीं। पड़ोसी के बुभुक्षित बालकों के आर्तनाद में, ग्राम की विधवाओं के हृदयभेदी प्रलाप में, कृषक मण्डली की करुणा-जनक रोदन स्वर में, शहीदों के परिवार के सन्तापपूर्ण उच्च विलाप में हमें सुख पूर्वक सुललित भोजन करने का कोई अधिकार नहीं है। जब देश नग्न है, दरिद्र है, निर्धन है, जब हमारे करोड़ों भाइयों को एक समय भी भोजन नहीं मिलता, जहां नित्य ही दरिद्रता एवं अत्याचार का भीषण नृत्य हो रहा है। जिस देश के उज्ज्वल भविष्य, जिस देश की आशा, वे कुसुम कोमल बालक फांसी पर लटकाये जा रहे हैं एवं उनपर नाना प्रकार के पाशविक अत्याचार किये जा रहे हैं, उस समय हमें क्या अधिकार है कि हम अपने ऐश्वर्य और अपने सौभाग्य को घृणित पैशाचिक कार्यों में लगायें ? नहीं यह अधर्म है, घोर पाप है, भीषण पतन है, घृणापूर्वक कलङ्क है अन्याय की पराकाष्ठा है, अत्याचार है और निर्दयता है।

दादाजी—वाह. वाह आज तो आप खूब लेक्चर झाड़ रहे हैं "पर उपकार कुशल बहुतेरे" का राग अलाप रहे हैं। क्या आप इतना जानते हुए भी देश के लिये अपना कोई स्वार्थ बलिदान कर रहे हैं। निर्बल भाइयों की, समाज पीड़िता बहिनों की और भूखों मरते हुए

किसानों की रक्षा करने को क्या आपने कभी कोशिस की है ? क्या निर्बल हो गये हो ? क्या तुम्हारे हृदय में साहस नहीं है। क्या तुम्हारे भुजाओं में शक्ति नहीं रह गई है ? क्या तुम्हारे रगों में पूर्वजों का खून उबाल नहीं मार रहा है ? क्या तुम अब भी वही हो जो पहले थे ? क्या तुम निरंकुश नौकरशाही के विरुद्ध लोहा लेने में हिचकते हो ? क्या तुम युवक नहीं हो ?

शेर -- (स्वगत) ऊफ. नहीं सहा जाता। क्षत्रिय बालक की भुजायें फड़कती हैं। खून में उबाल आ रहा है। युवक समुदाय पर धब्बा लग रहा है। (प्रगट) ठहरिये जनाब, हम अब भी वही हैं जो हम पहले थे। हम बदल नहीं गये, हम कायर नहीं हैं, हम बुजदिल नहीं हैं, हम में भी वही शक्ति है, वही देशभक्ति है, जो हमारे पूर्वजों में थी। वही साहस है जिससे हमारे पूर्वज शत्रुदल में खलबली मचा देते थे, समरक्षेत्र को खून से परिप्लावित कर देते थे, कायरों के हृदय में भी वीरता का सञ्चार कर देते थे, हम में अब भी वही बलिदान है, जिससे पृथ्वी प्रकम्पित हो जाती थी, दिक्पाल थर्रा उठते थे, देवता चकित रह जाते थे। हमारी रगों में भी पूर्वजों का खून है। वह खून अब उबाल खाता है। मातृभूमि की रक्षा के लिये पीड़ितों की सहायता के लिये, दलितों के उद्धार के लिये और देश को परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त करने के लिये हृदय भूमि पर भौंचाल आता है:—

एक क्षत्रिय पुत्र हूं मैं, मुझको ये अभिमान है।
अपनी कुल की लाज का, हरदम ये दिलमें ध्यान है॥

मुझको तो प्राणों से भी प्यारी ये कोमी आन है।
जिसमें है दर्दे वतन जग में वही इन्सान है॥
देश के खातिर सदा हाजिर ये मेरी जान है।

मदन—पर वह किस दिन के लिये ? क्या अभी वह समय नहीं आया है ?

(केदार का प्रवेश)

केदार—आ गया है, आ गया है। वह समय आ गया है जब तुम्हें देश के लिये मरना होगा। स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति चढ़ाना होगा। सर्वस्व समर्पण कर अपने हृदय के रक्त से आजादी का पौधा सींचना होगा। मित्रो अब वह समय दूर नहीं है जब तुम्हें देशोद्धार के लिये अपनी जननी जन्मभूमि को अन्यायी विदेशियों के अपवित्र हाथों से छुड़ाने के लिये, जाति धर्म की रक्षा के लिये और दुराचारियों के नाश के लिये तलवार उठाना पड़ेगा। खड्ग धारण करना पड़ेगा। आजादी खेल नहीं है। उसे प्राप्त करने के लिये बलिदान की आवश्यकता है। वह कायरों की प्रणयलीला नहीं, बहादुरों की अङ्कशायिनी है। विलासियों की वासना नहीं वीरों का उन्माद है। बुजदिलों का प्रलाप नहीं, शहीदों का शृङ्गार है। आजादी के आनन्द को सच्चे देशहितैषी. क्रान्ति के निर्भीक पुजारी ही जान सकते हैं। बुजदिल, नामधारी नेता एवं कायर नहीं। समझे भाई····· ·····

रवि— समझता हूं भाई! बहुत दिनों से आंखों पर एक परदा पड़ा हुआ था, वह आज दूर हो गया। आज मेरी आंखें खुल गईं। आज

आंखों के आगे माता का वह दीन वेष दिखाई दे रहा है। वह देखो, माता सजल नेत्रोंसे अपना अंचल फैलाकर कुछ मांग रही है। उफ़ ! मां तुम्हारी यह दशा ? मां, मां ! तुम्हारी आंखोंके आसुओंको हम नहीं देख सकते। दूंगा, दूंगा। माता ! तुम्हें जिस वस्तुकी आवश्यकता है उसे दूंगा। तुम्हारे शून्य अंचलको, तुम्हारा खाली गोदका आजादीके बच्चोंसे भरी पुरी देखूंगा। उठो तैयार हो जाओ भाइयो ! घोर प्रलय होगी। अन्यायी शासनका अन्त होगा। परतन्त्रताकी नीच दासताकी जञ्जीरें तोड़ दी जायंगी। क्रान्तिकी लहर प्रबल वेगसे उठेगी। वह लहर एक अनुपम लहर होगी जो परतन्त्रता रूपी बादल को फाड़ डालेगी, सोये हुए भाइयोंको जगायेगी, कायरोंके हृदयमें वीरताका सञ्चार करेगी, गुलामोंके हृदयमें भी विमल स्वाधीनताका आकांक्षा जागृत कर देगी... ...

शंख—और स्वाधीनताकी गूंज उठने लगेगी। भारतके कोने कोनेसे स्वतन्त्रताकी आवाज आने लगेगी। हरएक देशसे, हरएक गांवसे, हरएक घरसे, हरएक मुंहसे—हरएक वाणीसे और हरएक जिह्वासे एक ऐसी अग्निमयी जागृत उत्पन्न होगी, जो विश्वके कोने कोनेमें व्याप्त होकर, अत्याचार, अन्याय और पशुबलके घोर वनको भस्म कर देगी।

उस समय भारतवर्ष के वीर युवक प्रलय-कालके शङ्कर होंगे और स्त्रियां, हां भारतकी वीर माताएं वे वीर प्रसविनी, कोमलाङ्गी बालाएं देशोद्धारके लिये, मातृ-भूमिके सङ्कट-निवारण के लिये साक्षात् रणचण्डीका वेष धारण करेंगी। अन्यायी शासन की जड़ हिला देंगी। नौकरशाही का तख्ता नष्ट-भ्रष्ट कर देंगी।

मदन—निःसन्देह ! और बालक भविष्यकी आशा देशकी अभिलाषा. वे वीर बालक समरक्षेत्रको पापियों और अन्यायियोंके रक्तसे रंग देंगे। उस समय उनका खिलौना प्रचण्ड कालके समान भयङ्कर शस्त्र होगा और रण-क्षेत्र खेलका मैदान होगा। वे वीर बालक फुटबालके खिलाड़ी होंगे, फुटबाल, अन्यायियों एवं देशद्रोहियोंकी खोपड़ी होगी और आजादी "गोल" (Goal)होगा। भारतका बच्चा बच्चा वीर अभिमन्यु होगा। और पिता धनुर्धारी पार्थ। उनकी मातृ भूमिके उद्धारकी भीषण प्रतिज्ञा भीष्म-प्रतिज्ञाके समान होगी, उनका त्याग वीरव्रती महाराणा प्रतापके समान होगा। और 'प्राण जाय अरु वचन न जाई' यह उनका अटल सिद्धान्त होगा।

बाबाजी—कौन प्रताप ? क्या वही प्रताप जिसने मातृ-भूमि चित्तौड़की रक्षाके लिये, अपने वीर-व्रतका पालन करनेके लिये, राज्य-भोग, ऐश्वर्य्य, सुख और आनन्दको तिलाञ्जलि देकर जङ्गलों और पहाड़ोंकी खाक छानी थी, जिसने अपना सारा जीवन देशोद्धारमें लगाकर अखण्ड देशभक्तिके व्रतका पालन किया था ?.....

शेर—वही, वही प्रताप जिसका प्रताप चारो दिशाओंमें व्याप्त है। वही दीनोंका बन्धु प्रताप, निर्बलोंका बल प्रताप, अबलाओंका धन प्रताप, विधवाओंका अरमान प्रताप, देशकी जान प्रताप, वतनके शहीदोंकी शान प्रताप, चित्तौड़का अभिमान प्रताप और .....

(नेपथ्यसे रोनेकी आवाज सुनकर सब चौकते हैं)

मदन—हैं, हैं, यह रोनेकी आवाज कहांसे आती है ? देखना चाहिये क्या बात है ?

सब— चलो, चलो देखें किसकी पुकार है।

(सबोंका प्रस्थान)

अङ्क १—दृश्य ६

स्थान—बाग का बाहरी हिस्सा।

(मिस्टर गोपालदास इन्सपेक्टर सी० आई० डी० हांफते और दौड़ते हुए आते हैं तथा बीच बीच में चौंक कर पीछे देखते जाते हैं।)

गोपाल—नाकों दम हो गया है इन पाजी क्रान्तिकारियों के मार। जब से उस मरदूद को गिरफ्तार किया है तब से शैतान बेतरह पीछे पड़े हुए हैं। और हमारी बहादुर गवर्नमेन्ट को भी तो देखो, जिस वक्त उसको पकड़ना था उस वक्त तो खूब बढ़ावा दिया, खूब इनाम देनेका लालच दिया। और जब असामी पकड़ गया, तब इनाम के नाम अंगूठा दिखा दिया और ऊपर से पकड़ाने वालेका भी क्रान्तिकारी होने का सन्देह करने लग गई इनाम में यही बेचारे को हाथ लगा कि उसकी भी जान खतरे में पड़ गई। और अब जब इस सी० आई० डी० बहादुर की जान इन बदमाशों के मारे खतरे में है तब किसी तरह की मदद देना तो दरकिनार बिचारे इन्सपेक्टर को अपनी जान बचाने के लिये दर-बदर ठोकर खाना पड़ रहा है। अभी एक पाजी पीछे पड़ा हुआ है। बाबा रे बाबा! (हाथ से दिखला कर) इतना बड़ा बम दिखलाता है। अपने रामका तो बम का नाम सुनते ही, बाबा, सत्तावन पीरों के

नाम याद आ जाते हैं और नानी की नानी की नानी, क्या बतावें सात पुश्त तक की नानी मर जाती है। देखते हो न, उस पाजी के मारे भागते भागते बेचारे इन्सपेक्टर के मोटे शरीर का क्या बुरा हाल हो गया है। बुरा हो इन क्रान्तिकारियों का। अरे भाई सिर्फ हमारा ही बुरा हाल नहीं है। हमारी बहादुर गवर्नमेन्ट का भी इनका नाम सुनते ही पाजामा एकदम चार गज ढीला हो जाता है। इधर तो यह हाल है ही उधर घर का भी हाल बेढब हो गया है सोचा था किसी तरह घर पहुंच कर बीवी के लहँगे में छिपकर जान बचाऊँगा सो उस चुड़ैल की अक्ल भी न मालूम आजकल किस बियाबानमें चरने चली गई है। उसका भी दिमाग आजकल एकदम अतल, वितल, सुतल, रसातल कहां तक गिनावें सातवें आसमान पर चढ़ गया है। अब इस बिगड़ैल दिमाग को नीचे उतारने की भी कोई तदबीर नजर नहीं आती और यहीं आकर बेचारे इन्सपेक्टर की अकल चकराती है। बाबा बुरा हो इन बदमाशों का। मेरी बीबी के दिमाग में इन पाजियों ने न जानें कौन सा फितूर घुसा दिया है कि घर पर ठहरने ही नहीं देती बिगड़ैल सांड़ की तरह काटने दौड़ती है। कहती है कि जब इतना ही डर था तब काहे को सी० आई० डी० हुए ? क्यों नहीं क्रान्तिकारियों में मिल कर देश का कुछ उपकार किया ? तोबा, तोबा ? क्रान्तिकारी बनकर फांसी पर चढ़ने जायें, जङ्गल-जङ्गल फटकते फिरें और हमारे ही ऐसा पेशा करने वालों को गोली का शिकार बनायें ? अरे भाई बन्दे राम सब समझते हैं उस मरदूद की, जो कल फांसी पर चढ़ने वाला है, की बीबी से मेरी बीबी की

बड़ी दोस्ती है उसी शैतान ने मेरी बीवी के दिमाग में यह सब खुराफात पैदा किया है नहीं तो मेरी बीवी की सी पतिव्रता एक दो, तीन, चार सातों लोक में भी नहीं मिलेगी। दांत पीसकर अच्छा, इस परेशानी से जरा जान लो बरकत मिले तो मैं चर्चा को··· ··· ··· (नेपथ्य से)

खतम कर देशद्रोही व्यक्ति के उस अधम जीवन को।
कटा कर दासता मां का सुखी अब हम बनायेंगे॥
सम्हल जा ऐ दिले नादान मतकर दुश्मनी हमसे।
जहां से "देशद्रोही" नाम तक को हम मिटायेंगे॥

गोपाल—या अल्लाह, आ पहुंचा शैतान खोपड़ी पर। बच्चा गोपालदास भागो अब सिर पर पैर रखकर नहीं तो अभी जिन्दगी का खात्मा हुआ चाहता है। बाबा रे बाबा, वह देखो! वह आ रहा है। अरे बाप रे! बम·····बम··· ··ब्····ब·····ब्·····बम दिखलाता है। भागो यहां से।

(भागता हुआ जाता है, पीछे पीछे युवक एक हाथ में पिस्तौल तथा दूसरे हाथ में बम लिये हुए उसका पीछा करता है। गोपालदास की स्त्री का प्रवेश

गङ्गा—अभी अभी तो इधर ही आते हुए देखा था। इतने ही में कहां चले गये? सचमुच भाई! इन सी० आई० डी० वालों की भी बड़ी मट्टी पलीद है। इधर तो वतन के भाई उनके नाम पर थू-थू करते हैं और उधर क्रान्तिकारी उन्हें परेशान किये रहते हैं। कितनी बार मना कर चुकी कि इस पेशा को छोड़ दो लेकिन उनके सर

पर तो अजीब खपत सवार है। देखो न, आज सवेरे ही से सर पर पांव रक्खे भाग रहे हैं लेकिन तब भी क्रान्तिकारियों से पीछा नहीं छुटा सके। अच्छा जरा इन्हें भी आटा चावल का भाव मालूम कर लेने दो बहुत इन्सपेक्टरी की डींग हांका करते थे (सामने देखकर) वह देखो! हजरत भागते हुए इधर ही आ रहे हैं। चेहरा कैसा शैतान की तरह हो गया है। अब क्यों नहीं दिखलाते इन्सपेक्टरी का जोर। अब क्यों नहीं साहेब बहादुर मदद करने आते? अच्छा जरा छिपकर देखना चाहिए क्या करते हैं। (छिप जाना)

गोपाल—(हांफते हुए आकर) अरे बाप रे बाप, भागते भागते टांग टूट गई। खुदा किसी तरह इस मुसीबत से बचावे तो फिर कभी भी इन्सपेक्टरी का नाम न लूंगा। यह गवर्नमेन्ट भी कैसी बदजात है कि हम लोग उसके लिये हमेशा जान जोखिम में डालकर काम करते हैं और वह हमारी मुशीबत को और कोरी आंखों से भी नहीं देखती। भाई, अब तो नहीं दौड़ा जाता चलूं पिछवाड़े के रास्ते घरमें घुसकर किसी तरह जान बचाऊँ। लेकिन वहां जाने पर उस चुड़ैल से यदि मुठभेड़ हुई तो खैर देखा जायगा।(जाना)

गङ्गा—प्रगट होकर) आ रही है मियां की अक्ल अड्डे पर भाई, कामिनी की बातों से तो खाली दिमाग ही बदला था पर आज इन लोगों की हालत देखकर मन भी बदल गया। अच्छा चलूं। शाम हो रही है घर चलकर आज फिर उन्हें समझाऊंगी कि अब भी तो इस मरी इन्सपेक्टरी को तलाक दो नहीं किसी दिन किसी

देश-सेवक के पिस्तौल की गोली का निशाना बनकर दुनियां से कूच कर जाओगे। या ईश्वर बचाना इन देशद्रोहियों से।

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना।
प्यारे वतन को इसदम आजाद है बनाना॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने।
आखिर दम अदम को होगा कभी रवाना॥
परदेशियों का इस दम जो साथ देरहे हैं।
उनको हराम है अब भारतका अन्न खाना॥
माताकी कोख नाहक करते हो तुम कलङ्कित।
दो दिन की जिन्दगी है इसका नहीं ठिकाना॥
युवको समय यही है कुछ करलो देश-सेवा।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खना।

(गाते हुए प्रस्थान)

अङ्क १—दृश्य ७

स्थान—रास्ता ।

(शोक से व्याकुल माता का प्रवेश । बाल बिखरे हुए हैं वस्त्र फटा हुआ है वेश पागलों का सा है ।)

माता—श्याम, श्याम ! हाय अब श्याम कहां ? मेरा लाल, मेरे नयनों का तारा, मेरे जीवन की नौका, इस अभागिनी का अवलम्ब कहां ? हाय, आज मेरी गोद को सूनी करके, मुझे निराधार छोड़ कर मेरा दुलारा श्याम कहां गया ? हाय बेटा, इस दारुण विपत्ति में तेरे पिता ने तो मेरा साथ छोड़ ही दिया था, अब तू भी इस दुखिया को रोती तड़पती छोड़कर चला गया । हाय, अब मैं किसे 'बेटा, बेटा' कहकर पुकारूंगी ? किसे अपनी सूनी गोद में बिठाकर प्यार करूंगी ? किसके कोमल मुखको देखकर जीवन के अन्तिम दिन बिताऊंगी ? हाय, इस वृद्धा के एकमात्र सहारे को, अन्धी की लकड़ी को कौन निर्दय निष्ठुर नर-पिशाच छीनकर ले गया ? ओ बेटा श्याम, तुम कहां हो ? देखो तुम्हारी मां रो रही है, तुम देखते नहीं ? तुम्हें दया भी नहीं आती ? श्याम, हा ! मेरा श्याम भूखों तड़फ रहा था । उसे मेरे सिवाय कोई देखने तथा दया दर्शानेवाला नहीं था । क्या उसे स्वर्ग के मधुर फलों की याद आ गई ? हैं, क्या वो उन मधुर फलों को पाने की लालच से अपनी रोती हुई माता को अकेली छोड़कर वहां चला गया ? कहां, किस देश में किस दिशा में मेरा लाड़ला

श्याम गया है ? पृथ्वी जवाब दे। हैं ! पृथ्वी भी जवाब नहीं देती, न दो ! न चाहिये उत्तर (हँसती है) किसका श्याम ? कहां का श्याम ? श्याम मेरा कोई नहीं था ! मैं खुदही श्याम हूं (चौंककर) उठ है, वहां है। मेरा लाड़ला श्याम वहां, है ! मेरे जीवनका आधार. मेरा प्यारा देराका दुलार ! श्याम वहां ! हा ! वहां उसका दुलार करनेवाला कोई नहीं। वहां क्या उसकी देख रेख करनेवाला होगा ? मेरा श्याम अकेले वहांपर व्याकुल तो न होता होगा ? नहीं घबराता है। देखो, वो देखो मुझे इसारेसे बुलाता है ! मत घबरा। आती हूं, मैं भी तेरे ही पास आती हूं। क्षमा करना पति-देव ! अन्तमें भी तुम्हारा दर्शन न कर सकी। जहां कहीं भी हो इस अभागिनी तारा का प्रणाम स्वीकार करना तथा सब अपराधोंको क्षमा करना। आह सर चकराता है, जी छुटा जाता है, गरमी लगती है, गला सूख रहा है। पानी पानी आह आह (गिरना) मरी, मरी, पानी, पा····· पा—— पानी (मर जाती है सन्याशीके बेशमें किसानका प्रवेश)

किसान—आह क्या समाप्त हो गई ! मेरी प्यारी तारा मेरी जीवनकी संगिनी तारा ! हा पुत्र वियोगमें रो रो कर मेरी चिर सहचरी तारा भी चलबसी ? तारा तारा तुम सौभाग्यवती हो। तू अपने प्राण प्रिय सन्तानकी वियोग सहन नहीं कर सकी। इसके विछुड़ते ही तुम भी इस तुच्छ जीवन लीलाको समाप्त करके प्यारे श्यामकी रक्षाके लिये उसके पास चली गई हो ?

हाय मैं ही अभागा हूं ! निर्दयी हूं ! मेरा ही हृदय पाषाण सा कठोर है, जो अब भी नहीं फटता। प्रभो क्या यही दिन दिखानेके लिये आजतक जीवित रक्खा था ? नहीं, नहीं अब जीनेकी अभिलाषा नहीं है ! जीवन नीरस हो चुका है ! सब कुछ खोगया। धन दौलत, ज़मीन, जेवर सभी लुट चुका था, प्राणोंसे प्यारा श्याम भूखों तड़फ तड़फ कर मर गया। एक जीवनकी सहचरी प्राणप्यारी तारा थी वह भी मुझे बिलखता हुआ दौड़ कर चली गई अब इस जीवनको किनके लिये धारण करू ? नहीं नहीं अब मैं नहीं जी सकता ? प्रभो तुम दयालु हो ! इस अधम व्यक्तिके अपराधोंको क्षमा करना। तारा, तारा : प्राण प्यारी तारा, ! मेरे लाल श्याम ! आता हूं, मैं भी तुम लोगोंके पास आता हूं (छुरा निकालकर) शान्ति प्रदान करनेवाली कटार मेरे जीवन लीलाको समाप्त कर ! (आत्म-हत्या करनेकी चेष्टा करना। कड़ाकेकी आवाज के साथ भगवान श्रीकृष्णका प्रगट होना, किसानका चौकना)

श्रीकृष्ण—अबोध मानव ! यह क्या कर रहा है आत्म हत्यासे बढ़कर कोई पाप नहीं है। उठ चित्तको स्थिर कर ! अभी तुझे संसारमें बहुतसे कार्य्य करने हैं। जानता है श्याम और ताराकी मृत्युका कारण क्या है ? तुम जानते हो एक समय यही भारत धन-धान्यसे सम्पूर्ण था परन्तु आज यहां दरिद्रता विराज रही है। यहांके अधिवासी सुखी और स्वतन्त्र थे पर अब परतन्त्र और दूसरोंके मोहताज़ हो रहे हैं। कभी भी किसीको इस भारत में

अन्नके लिये कष्ट उठाना न पड़ा था परन्तु आज हजारों मनुष्य भूखसे तड़फ तड़फ कर मर रहे हैं ? इसका कारण क्या है ? अत्याचारी शासक भारतवासियोंका खून चूस चूसकर देशका सारा धन सात समुद्र पार अपने सुरक्षित दुर्गमें ले गये हैं। तुम्हारे पास कुछ खानेको नहीं रह गया। क्या यह सब बातें चुप चाप सह लेनेकी हैं ? नहीं इसका बदला लेना होगा। तुम्हें देशोद्धार के लिये बहुतसा कार्य्य करना है। तुम श्याम और ताराके मोहमें फंसकर अपना कर्तव्य भूल गये थे इसी लिये वे तुम्हारे पाससे चले गये हैं। वह देखो, सुनो वो क्या कहते हैं—

(कृष्णका ताली बजाना सीन ट्रांसफर। आकाशमें तारा और श्याम दिखाई देते हैं)

श्याम—पिताजी आप हमारे मोहमें फंसकर अपने जीवनके मुख्य उद्देश्यको भूल गये थे। आप भूल गये थे कि आप कौनसा गुरुतर कार्य्य सम्पादन करनेके लिये इस विश्वमें अवतीर्ण हुए हैं। इसी लिये इस नाशकारी मोहको हटाकर विमल कर्तव्य ज्ञानसे आपके हृदयमें प्रकाश फैलानेके लिये ही हमलोग आपको छोड़कर यहां चले आये हैं। जाइये तुच्छ मोहको त्यागकर और संसारमें अपना उद्देश्य पूर्ण कर दिखाइये। (अदृश्य होना)

तारा—प्राणाधार ! जाओ ! हमारे मोहको त्यागकर हमारे ही समान हजारों पीड़ितों और दुखियोंकी सहायता करके उनपर उपकार, तथा पाशविक नरकसे उद्धार करो ! आपके उद्देश्यकी सिद्धि हो। (अदृश्य होती है)

किशान—मिल गया। मिल गया भूले हुएका मार्ग, मेरे जीवनका उद्देश्य, मिल गया! प्रभो अबतक मैं घोर अन्धकारमें भटक रहा था। आपने कृपाकरके मुझे प्रकाशमें लाकर खड़ा कर दिया है! प्रभो अब एक कृपा और कीजिये। कृपा करके मेरे उद्देश्य-सिद्धिका मार्ग भी निर्दिष्ट कर दीजिये।

श्री कृष्ण—जाओ वत्स! यही समीपहीमें उद्यानके पास कुछ नवयुवक बात-चीत कर रहे है। वे लोग भी देशोद्धारकी चेष्टामें लगे हुए हैं। जाओ और उनकी उद्देश्य-पूर्तिमें सहायता दो। तुम्हारा कल्याण होगा।

किसान—देव आपकी मंगलमयी व्यवस्थाकी जय हो।

(किसान सिर झुकाता है। श्रीकृष्ण उसके सिरपर हांथ रखते हैं। परदा गिरता है,)

अङ्क १ दृश्य ८

स्थान-उद्यानका अन्तिम भाग

(एक वृक्षके नीचे बैठा बालक रो रहा है)

बालक—कहां गये? खोजते खोजते हार गये परन्तु वे कुछ युवक तो नहीं मिले। भगवानने कहा था कि अभी अभी वे गये हैं। उनका आदेश पाकर मैं उन्हें खोजने चला। भूखसे अङ्ग शिथिल हो रहे थे, तो भी उन्हें रातभर ढूढ़ता रहा। पर आखिर वे युवक न मिले, नहीं मिले। चला भी तो नहीं जाता। हाय! अब कहां ढूंढूं? अङ्ग अङ्गमें पीड़ा हो रही है। भूखसे प्राण व्याकुल

हो रहे हैं हो भगवान कहां। कहां गये ये तुम्हारे युवक ? कहां गया तुम्हारा कल्याण ? हाय ! (युवकोंका प्रवेश)

केदार-हां— वह देखो। वह बालक रो रहा है। मालूम होता है अनाथ है बहुत दुःखी है चलो पूछ क्या बात है। हा ! हत भाग्य भारत ! तुम्हारी यह कैसी दशा है ? (बालकके पास जाकर) बालक कहो तुम क्यों रो रहे हो ? किसने तुम्हें सताया ? किसने तुम्हें दुखित किया है ? हमें तुम्हारी दशा देख दया आती है। बताओ तुम कौन हो ?

बालक—बतावें। कौन हैं ? हम क्या पता क्या है अनाथोंका।

नहीं जगमें ठिकाना है कोई दुखिया अनाथोंका ॥
सताया है हमें उस वायुके निष्ठुर झंकोरोंने।
हजारों हमसे कुम्हलाते हैं नित जिनके थपेड़ोंमें ॥
नहीं साथी कोई मेरा न कोई तरस खाता है।
ये जीवन-पुष्प हम दुखियोंका योंही बीत जाता है ॥

केदार—(स्वागत) हा ! वास्तवमें बालक बहुत दुखी है। एक एक अक्षरसे करुणाकी धारा बरसती है। शब्दोंसे हार्दिक सन्तापकी आभा निकलती है ! हा ! सत्य ही कहता है यह बालक कि हम अनाथोंका जीवन पुष्प इसी प्रकार मुरझा जाता है। अभागे भारत ! अभी तेरे भाग्यमें क्या बदा है। हा ! इस बालकका दुख तो नहीं देखा जाता (प्रकट साथियोंसे) देखते हो भाइयो ! इस बालककी दशा देखते हो। हमारे भारतकी दशा आज इतनी हीन हो रही है कि इसके प्यारे बच्चे दाने दानेको तरस रहे हैं !

हमारा स्वर्ण संसार आज इस प्रकार पैरों तले रौंदा जा रहा है। आज भारतके हजारों बच्चे इसी प्रकार अपने जीवनके प्रभातमें ही दुख और कष्टके महासागरमें ही डूब जाते हैं। भगवन् इस-अभागे भारतका कब उद्धार होगा? (बालकसे) बालक! बाल्यावस्थामें तुम बहुत दुखी होते हो। हमारी प्रार्थना है कि तुम अपनी कथा हमें सुनाओ। हम यथा शक्ति तुम्हारी सहायता करेंगे।

बालक—(स्वगत) इनकी बातोंसे तो ऐसा मालूम होता है कि देशोद्धार के लिये व्याकुल युवक यही हैं। तब क्या अनायास ही उनसे भेंट हो जायेगी। मालूम होता है कि भगवानने ही दया करके उन्हें मेरे पास भेजा है। (प्रकट) भाई! मैं अपना कथा क्या सुनाऊं। संक्षेपमें यही कहना है कि दुर्भिक्षके कारण मैं और मेरा माता कई दिनोंसे भूखे थे। कल रातको मेरी माता भूखसे व्याकुल होकर मेरे लिये चिन्ता करती हुई मर गई। मुझे बहुत भय हुआ। मेरी माताने एक बार कहा था कि भगवान हमारी सहायता करेंगे। भयके मारे मैं भगवानको पुकारने लगा। भगवानने मेरे पास आकर कहा कि अभी अभी देशोद्धारके लिये व्याकुल कुछ युवक उधरसे गये हैं। जाकर उनका साथ दो तो तुम्हारा कल्याण होगा। मैं रातभर उन युवकोंको ढूंढ़ता रहा परन्तु अभीतक वे नहीं मिले मैं अभीतक भूखा हूं। अब भूखके मारे चला नहीं जाता फिर उनको ढूंढ़ना।

(गौरी पाकेटसे मिठाईनिकालकर देता है। बालक प्रसन्नता-पूर्वक खाता है)

शेर:—बालक ! अब तुम्हें इधर उधर भटकना नहीं पड़ेगा। हमीं वे युवक हैं जिनकी तुम चर्चा कर रहे हो (साथियोंसे) भाइयो क्या इससे भी बढ़कर कोई दुःख पूर्ण बात होगी ? आज हमारे सैकड़ों भाई इसी प्रकारके कष्टोंमें पड़कर अकालही काल कवलित होते हैं। हमारी इस दुर्दशाका कारण क्या है ? यही अन्यायी शासन ! क्या अब भी चुपचाप बैठा जा सकता है ? नहीं कभी नहीं। भाई ! मेरे तो रक्तमें उबाल आता है, भुजायें बदला लेनेके लिये फड़कती है। हृदय व्याकुल हो रहा है। नहीं भाई ! बदला लेनाही होगा मातृभूमि के कष्टों का अन्त करना ही होगा।

या तो मर मिट मुक्त बनेंगे, तजकर पराधीनता पाश।
या फिर निश्चय कर जायेंगे, इस नौकरशाहीका नाश॥

(सन्यासी बेश मे किसानका प्रवेश)

किसान:—(स्वगत)

जिस दिन जहां करेंगे ये सब, स्वर्गलोकको चिर प्रस्थान।
वह दिन होगा पर्व और, होगा वह स्थल तीर्थस्थान॥

(प्रकट) अवश्य करना होगा ! माताके कष्टोंका निवारण करनाही होगा। हमारी जड़को खोखली करनेवाले इन म्लेच्छोंसे बदला लेना ही होगा। जिस प्रकारसे हो इनके सिंहासनको नष्ट भ्रष्ट करना ही होगा। युवको उठो बढ़ो आगे अपने कर्तव्यको कर दिखाओ ! माताने किन दिनोंके लिये तुम्हें पाला था इतना बड़ा तुम्हें किसने किया ! वही जननी आज म्लेच्छोंके

हाथों अपमानित हो रही है और तुम चुपचाप बैठे देख रहे हो। शर्म है, शोक है शतशः बार धिक्कार है। यदि मर्दानगीका दावा रखते हो तो आओ, युवकोंके समुदायपर धव्वा न लगवाओ। जननीके बहते हुए आसुओंको पोंछो और आओ जिस चीजकी तुमसे भिक्षा मांगती है उसे दे दो। स्त्रीके प्रेमको, दोस्तोंकी चापलूसीको मिथ्या संसारको धनके लालचको एवं महलके ऐश्वर्य्योंको भूल जाओ। याद रक्खो केवल देश प्रेमको तथा अपनी आज़ादीको। और सर्वदा मृत्युको आलिङ्गन करनेके लिये तैयार हो जाओः—

नौकरशाही याद रख अब वो जमाना पास है।
जबकि भगाई जायगी भारतसे तू इङ्गलैन्डको॥

बाबाजी—भाई तुम कौन हो? उस गेरुए वस्त्रमें कोई छुपे रुस्तम तो नहीं हो?

किसान—नहीं भाई मैं एक बहुत दुःखी किसान हूं। भूखसे व्याकुल होकर पुत्र मर गया। पुत्र शोकसे व्याकुल हो कर मेरी स्त्री भी इस संसारसे चलबसी। उन दोनोंके शोकसे व्याकुल हो कर मैं भी आत्महत्या करने जा रहा था, कि भगवान श्रीकृष्ण ने प्रकट हो कर मुझे वैसा करनेसे रोका और कहा कि उद्यान के पास देशोद्धारके लिये कुछ व्याकुल—युवक बातचीत कर रहे हैं, जाकर उनका साथ दो। तुम्हारा कल्याण होगा। इसी लिये है यहां आया हूं और आप लोगोंसे कहता हूं कि भाइयों इसका बदला अवश्य लेना होगाः—

आज कल शौके शहादत इस कदर की है मुझे।
शमअ लेकर ढूंढ़ता फिरता हूं घर जल्लाद का॥

मनद—देखो यह दुःख-पूर्ण स्थिति का दूसरा उदाहरण है। भाइयो! हमें प्रसन्न होना चाहिए कि भगवान श्रीकृष्ण स्वयं हमें क्रान्ति का उपदेश दे रहे हैं। देखो भाइयो देखो, और अब भी अपनी आंखें खोलो। चलो, माता को दुख से छुड़ाने के लिये कमर कसकर एवं प्राणों को हथेली पर रखकर चलो।

शेर—नहीं सहा जाता, नहीं सहा जाता, आह! स्वर्णमयी भारतभूमि की ऐसी अवस्था, ऐसा घोर पतन, मधुसूदन! यह तुम्हारी कैसी लीला है? जिस भूमि को तुमने स्वयं बसाया, जिस भूमि पर तुम सर्वदा कृपा रखते थे, उसकी ऐसी दुर्दशा देखकर क्या तुम द्रवित नहीं होते? क्या तुम्हारा हृदय पाषाण हो गया है?

(आकाश वाणी—तुम्हारा त्याग सराहनीय है, तुम अवश्य विजयी होगे!)

रवि—वीरो, वह देखो, भगवान हमें आदेश दे रहे हैं कि अपने कर्तव्य पर डटे रहो, तुम्हारा कार्य्य सफल होगा। हमारा मार्ग प्रशस्त है। हमें कोई बाधा रोक नहीं सकती। हमारे भगवान स्वयं सहायक हैं। उठो, अपने प्राणों की आहुति स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ा दो। माता को कष्ट से छुड़ाओ या स्वयं पृथ्वी माता की गोद में सो जाओ।

यदि ये है तो वहां पर क्रान्ति का झण्डा खड़ा होगा।
नहीं तो आर्य्य मां की गोद में बालक पड़ा होगा॥

शेर—मैं तैयार हूं, प्रस्तुत हूं। मैं पीछे नहीं हट सकता, यह मेरी अटल प्रतिज्ञा है। जब तक यह शरीर वर्तमान है, इन लम्बी २ भुजाओं में जब तक शक्ति है, जब तक हृदय में साहस है, तब तक सर नीचा नहीं कर सकता। शरीर के टुकड़े २ कर चीलों और कुत्तों को खिलवा दिया जाय, जिगर में शमसीर पार कर दी जाय, नेत्र निकाल लिये जायें, पर जब तक इस शरीर में पवित्र भारत का एक भी बूँद लहू रहेगा तब तक यह मेरी वीर प्रतिज्ञा अटल रहेगी। हरएक निश्वास से क्रान्ति की ध्वनि निकलेगी। अब तो जो लगन लगी है वह छूट नहीं सकती। चाहे प्राण शरीर को त्याग दे, आकाश अपना स्थान भले ही छोड़ दे, भगवान भास्कर में भले ही शीतलता आ जाय, शीतल ज्योत्सना भले ही उष्ण हो जाय, सृष्टि का सारा कार्य्य क्यों न छिन्न भिन्न हो जाय पर मैं तो मर कर भी अपने प्रण से नहीं हट सकता। जब तक जननी जन्म-भूमि का, प्यारे स्वदेश का उद्धार न कर लूंगा, जब तक शहीदों के खूनका बदला नहीं ले लूंगा तब तक इस संसार में क्या, उस ससार में भी शान्ति से नहीं बैठ सकूंगा।—

उठो वीरगण, उठो आरती लेकर स्वागत करो सहर्ष।
मुक्त गुलामी से होनेका, फिर है आरत भारत वर्ष॥

केदार—बहुत दिनों से हृदय में एक कामना थी वह आज पूर्ण हो गई। भाई, आज तुम लोगों को पाकर हृदय उत्साह से भर गया है। आओ, हम सब युवकगण मिलकर माता की दासता की जञ्जीर को काट कर माता को सुखी बनावें। क्रान्ति के मार्ग में अग्रसर हो कर दुश्मनों के छक्के छुड़ावें।

बाबाजी—तो फिर देर क्या है ? क्या शकुन की आवश्यकता है ?

गौरी—नहीं बाबाजी शकुन की क्या आवश्यकता है। हम लोगों का शकुन तो "रक्त-ध्वज" ही है जो कुछ है वही है। और सबसे बड़ा शकुन तो 'बाजा' है।

शेर—निस्सन्देह, विलासियों के कांपते हुए हाथ उसे छू नहीं सकते, बुजदिल शस्त्र धारण नहीं कर सकते, कायर समर-क्षेत्र में नहीं आ सकते। यह तो वीरों का भूषण है, शहीदों का शृङ्गार है, क्रान्तिकारियों का उच्च आधार है। उसको ग्रहण करने वाले कांटे की सेज पर सोते हैं, कराल कालके मुखमें निवास करते हैं, मृत्यु की भीषण अग्नि में क्रीड़ा करते हैं, बुजदिल और कायर उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

बाबाजी—तो फिर देर क्या है ?

मदन—बस भाई बहुत हो चुका। विशेष बातों में समय बिताने की आवश्यकता नहीं है। बहुत दिनों तक गुलामी का मजा उठा चुके। अब जरा शमशीर के प्रबल धारका मजा शत्रुओं को भी चखा दो। देश के शहीदों को याद रख कर आगे बढ़ो। और मातृभूमि की छाती पर भीषण ताण्डव नृत्य करनेवाली दासता को सब युवक मिलकर खतम कर दो। भाई, देश पर बलिदान होने वाले शहीदों का नाम क्या इतिहास से अलग रक्खा जा सकता है ?

रवि—नहीं कभी नहीं। उन अमर शहीदों का नाम कभी इतिहास भूल नहीं सकता। जब तक पृथ्वी स्थिर है, जब तक भगवान भास्कर

पूर्व में उदय होते हैं, जब तक चन्द्र में शीतलता है, जब तक वायु में गति है तब तक वतन पर जां निसार करने वाले उन शहीदों का नाम नहीं भूला जा सकता। इतिहास के पृष्ठों में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। प्रत्येक भारतीय नवयुवकों के हृदय पर रक्ताक्षरों में अङ्कित रहेगा।

बाबाजी—तो फिर आओ आज ही से जननी जन्म-भूमि की सेवा का सङ्कल्प करो। नैसर्गिक बलिदान, ज्वलन्त त्याग और देश के लिये कुर्बान का एक अपूर्व उदाहरण बन जाओ।

केदार—ऐसा ही होगा। बस अब देरका काम नहीं है। प्राकृत वीर एक बार जिस बात का निश्चय कर लेते हैं उससे पीछे नहीं हट सकते। आओ हम सब लोग प्रतिज्ञा करें कि मरते दम तक देश ही की सेवा करेंगे। और भारत को आजाद करेंगे या स्वयं मर कर आज़ाद हो जांयगे।

(सब भुजा उठाकर प्रतिज्ञा करते हैं। 'क्रान्ति चिरञ्जीवी हो' की ध्वनि से आकाश गूंज उठता है)

मदन—लेकिन एक बात है। हमें एक सरदार की आवश्यकता है।

(श्रीमूर्ति का एक अखबार लिये हुए आना)

श्रीमूर्ति—अरे भाई, ताली बजाओ ताली!

रवि—क्यों, क्या बात है?

श्रीमूर्ति—अरे बड़ी खुशी की बात है, ताली बजाओ।

केदार—अरे कुछ कहो भी तो?

श्रीमूर्ति—हमारे वे छूट गये।

मदन—कौन छूट गये ?

श्रीमूर्ति—वही हमारे सरदार।

शेर—धन्य है परमेश्वर, तुम्हारी लीला अपरम्पार है।

केदार—जिस बात की आवश्यकता थी वह पूरी हो गई। उनसे बढ़कर हमें और कौन अच्छा सरदार मिलेगा ? बस वही हमारे विद्यार्थी जीवन का सरदार, क्रान्ति जीवन का भी सरदार होगा। आओ, सब कोई सरदार के पास चलें :—

(सबों का गाना)

मिटेंगे देश पै अपने यही अब दिल में आई है।
करें आजाद भारत को यही एक धुन समाई है॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है।
करें बरबाद हम इनको कि जिनसे दुश्मनाई है॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके सपथ हमने यह खाई है॥
है क्या ये जेल औ फांसी डराते हो हमें जिनसे।
करें आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदायी है॥
करो जुल्मोंसितम बेशक मगर यह भूल मत जाना।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं॥

(सबों का गाते हुए प्रस्थान)

अङ्क १ दृश्य ९

स्थान—एक पर्ण-कुटी।

(एक स्वच्छ पवित्र स्थान पर, भारत माताका तैल-चित्र रक्खा हुआ है पुष्प की मालाओं से चित्र सजा हुआ है। सन्यासी-वेश में सरदार माता की पूजा कर रहा है।)

सरदार—(ध्यान मग्न होकर) वन्दना:—

हमें दे जननी यह वरदान।
सफल कामना होवे राखूं मातृ भूमि सम्मान॥
मलिन देख जननी तव मुखको, व्यथित होत हृद्धाम।
सुखी देख मात। तुमको मम होवे पूरण काम॥ हमें०
विमल क्रान्ति की तरल तरंगें लहरावें अविराम।
कटें दासता की जञ्जीरें सुखी होय तव प्रान॥ हमें०
मातृभूमि की सेवा में हो जीवन यह बलिदान।
पाऊँ जन्म पुनः भारत में आऊँ मां के काम॥
हमें दे जननी यह वरदान॥

माता! एक समय वह भी था जब इसी भारत के वीर तुम्हारी प्रसन्न मूर्ति को देखकर हर्षित होते थे। परन्तु आज हम अभागों को तुम्हारा यह वेश देखना पड़ रहा है। मातेश्वरी, यह तुम्हारा दीन वेश हम लोगों को कब तक देखना पड़ेगा? चांद बादल में कब तक छिपा रहेगा? कब तक भारत के बच्चे इस यातना को सहते रहेंगे? हाय, कितना जुल्म है! अब तो देशभक्ति भी जुर्म

में शामिल हो गई है। माताके दुःखको देखकर चार आंसू बहाना राजद्रोह माना जाता है। आजादी के दिवाने युवकों को तो फांसी पर लटकाया ही जाता है, साथ ही उन निरपराध दुधमुंहें बच्चों को जो राजनीति का नाम भी नहीं जानते, जिन्होंने न कभी बम एवं पिस्तौल का देखना तो दूर रहा, नाम भी न सुना हो वे भी पकड़े जाते हैं, उनपर षड़यंत्र का मामला चलाया जाता है और न्याय के नाम पर जेलों में सड़ाये जाते हैं अथवा कालेपानी की सजा दी जाती है। धन्य है तेरा न्याय। मातेश्वरी, बताओ कब तक भारत के लालों पर, तेरी आंखों के तारों पर इस प्रकार का वीभत्स अत्याचार होता रहेगा ? कब तक भारत के होनहार बच्चे इस अधम नौकरशाही के अत्याचारों को सहते रहेंगे ? ओ अत्याचारी शासन, तेरा नाश अवश्यमभावी है। तेरा नाश होगा और अवश्य होगा। अन्याय, दुराचार, अनाचार और पशु-बल पर स्थित शासन का नाश अवश्य होगा। माता तुम्हारा यह दीन वेश नहीं देख सकता हूं हृदय फटा जाता है। प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि पशुबल का अन्त अवश्य करूंगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग में अपने प्राणों की भेंट चढ़ाऊँगा यदि मां, तुम्हें सुखी न बना सकूंगा, आजादी प्राप्त करने में नाकामयाब होऊंगा तो तुम्हारे चरणों में अपने जीवन को अर्पण कर स्वतन्त्र देश में जाऊंगा परन्तु गुलाम भारत में न रहूंगा।

(कड़ाके को आवाज के साथ भारत माता का प्रकट होना)

भारत माता—धन्य हो मेरे लाल। तुम्हारे जैसे पुत्रोंपर माताका अभिमान है। बेटा ! मैं तुझे अशीर्वाद देती हूं कि तेरा मार्ग फूलों का हो

जाय सभी कठिनाइयां तेरे लिये सहज हो जांये। आपत्तियां तेरे आगे नतमस्तक हों। तेरा यश चारों दिशाओं में व्याप्त हो। भारत के युवक यदि तेरे जैसे युवक हो जायें तो मेरा दुःख अवश्य दूर हो जाय। युवको चेतो और अब भी चेतो अन्यथा बड़ी बुरी दुर्दशा होगी पीछे पछताना पड़ेगा। जिस कठिन व्रत को तूने धारण किया है वह सुफल हो, तेरी कामना पूर्ण हो।—

बेटा इसी दिन के लिये था दिया जन्म तुझे,
करना कर्तव्य को रणाङ्गण में डटके।
होना बलिदान मातृभूमि बलिवेदी पर,
देना कभी भूल के न पीछे पैर हटके॥
धन्य होगी कोख पुण्य होगा दूध मेरा,
देख आह! तेरा गला फांसी पर लटके।
तन पर लाठियां हों गोलियां हों सीने पर,
शीश पर याकि फिर तेरे तेग लटके॥

(अदृश्य हो जाना)

सरदार—मातेश्वरी तुम्हारी जय हो! तुम्हारा आशीर्वाद सफल हो! जिस दिन माता मैं तुम्हें सुखी बना सकूंगा उस दिन मेरा जीवन धन्य होगा।

(नेपथ्य से क्रान्ति चिरंजीवी हो, साम्राज्यवाद का विनाश हो, सरदार की जय हो की आवाज आती है)

हैं यह कैसा शब्द है? हृदय रोमांचित हो गया क्या ये मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी है? अहा! मेरा जीवन धन्य है जो

मुझे ऐसे साथी मिलें। मातेश्वरी! तुम्हारी अपार अनुकम्पा मुझ पर सदैव इसी प्रकार बनी रहे। (कुछ युवकों का प्रवेश)

युवकगण—"क्रान्ति चिरजीवी हो", "बहादुर सरदार की जय हो", "साम्राज्यवाद का ध्वंस हो"।

सरदार—मेरे प्यारे मित्रों, बाल्य-जीवन के बहादुर सहचरो! आज बहुत दिनों के बाद तुम्हें देखकर हृदय प्रफुल्लित हो गया है। तुम्हें पाकर मैं धन्य हूं। कहो मेरे लिये क्या आज्ञा है?

केदार—प्यारे सरदार, हम भला आपको क्या आज्ञा दे सकते हैं? हम तो आप ही की आज्ञा के भिखारी होकर आपके पास आये हैं। सरदार, मातृभूमि की यह दुर्दशा अब नहीं देखी जाती। हम लोगों की बहुत दिनों से इच्छा थी कि किसी प्रकार से जननी जन्म-भूमि को इस भयानक पतन से बचावें परन्तु हमें कोई सुयोग्य एवं विश्वासी सञ्चालक न मिला था इस कारण लाचार थे। आज हम लोगों को पता चला कि आप छूट गये अतएव हम लोग दौड़े हुए आपके पास आये हैं, हम लोगों की इच्छा है है कि हमारे बाल्य-जीवन का सरदार क्रान्ति-जीवन का भी सरदार हो।

सरदार—प्यारे भाइयो! मातृभूमि की इस दुरावस्था को देखकर ही तो मैंने यह सन्यासी का वेश धारण किया है। मेरा तो जीवन ही माता के चरणों में उत्सर्ग है। मेरी तो प्रतिज्ञा ही यही है कि माता को सुखी बनाने में यदि मेरे बलिदान की आवश्यकता होगी तो मैं अहोभाग्य समझकर हँसते २ प्राणों को माता के चरणों पर

समर्पित करूँगा। भाइयो, माता की इस दीन दशा को देखकर कौन माता का ऐसा लाल है जो दुःखी न होगा। परन्तु भाई, क्रान्ति का मार्ग बड़ा ही कठिन है। इस मार्ग पर वही चल सकता है जिसे अपने प्राणों का तनिक भी मोह न हो। इस मार्ग में अनेकों ऐसी विपत्तियां आती हैं जो मनुष्य को विचलित करके पथभ्रष्ट कर देती हैं। इस लियेइस व्रत का पालन वही कर सकता है जिसके हृदय में अपूर्व साहस हो, जो भीषण से भी भीषण विपत्तियों का सामना करने के लिये हमेशा तैयार रहे, आवश्यकता पड़ने पर जो माता के लिये हँसते २ फांसी के तख्ते पर चढ़ जाय। जिसके हृदय में केवल देश-प्रेम की ही लहर हो। इसलिये भाइयो, खूब सोच विचार लो, जिसमें इतना साहस हो, जिसके हृदय में माता के प्रति ऐसी प्रगाढ़ भक्ति हो, वह तो इस मार्ग का अवलम्बन करे। और यदि किसी का हृदय जरा सा भी कम्पित हो वह अभी से इस मार्ग में न पड़े। इस मार्ग का अवलम्बन करने से घर द्वार छोड़ना होगा, वहां के आरामों को तिलाञ्जली देना होगा। अतएव इस मार्ग के पथिक होने के पहिले खूब सोच लो, समझ लो।

शेर—सोच चुका हूं, विचार चुका हूं, निश्चय कर चुका हूं। अपने हृदय को अच्छी तरह ठोंक पीट कर देख चुका हूं। सागर मर्य्यादा, हिमालय गौरव, सूर्य्य तेज, और वायु वेग भले ही छोड़ दे, सभी दिग्पाल अपने कर्तव्य से भले ही च्युत हो जायें परन्तु मैं अपने इस व्रत से कभी विचलित नहीं हो सकता। माता का दुःख देखते २ हृदय पक गया है। मां का स्वर्ण संसार आज श्मशान

हो रहा है, देश के बच्चे आज भूखों तड़फ तड़फकर मर रहे हैं— हमारा सम्मान आज अत्याचारी और अन्यायी विदेशियों का पद-रज बन रहा है, क्या अब भी हम सुख की नींद सो सकते हैं ? नहीं, कभी नहीं । प्यारे सरदार ! आपके बहकावेकी बातें हमें विचलित नहीं कर सकती । हम अपने पथको निश्चित कर चुके हैं । ये आंखें माता को सुखी देखना चाहती है । माता को सुखी बनाना हमारा ध्येय है । यदि माता को स्वतन्त्र कर सकें तो हमारे ऐसा कोई सुखी न होगा और अपने कार्य्य में निष्फल हुये तो हम सदैव के लिये आर्य्य माता की गोदमें सो जायँगे । आप हमें विचलित करने की चेष्टा न कीजीये मैं जोर देकर कहता हूं कि आपका प्रयास विफल होगा ।

देश सेवा में निरत हो देश ही का ध्यान हो ।
देश ही पर मर मिटें मम देशही अरमान हो ॥

सरदार— धन्य हो वीर ! तुम्हारी इस निर्भीकता पर यह व्यथित हृदय हजार वार बलिहार है । मैं तुम्हारी प्रतिज्ञाको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ हूं । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे सभी नवयुवकों के हृदयमें ऐसेही दृढ़ प्रतिज्ञाओं का समावेश करें । वीरो ! सत्य कहता हूँ , तुम्हें पाकर आज हृदय उत्साह से भर गया है । बहुत दिनोंसे हृदय में एक अभिलाषा थी वह आज पूर्ण हुई । जननी जन्मभूमि के कष्टों को देखकर सर्वदा आंखो से जल गिरा करते थे । माता को कष्ट से छुड़ाने के लिये हृदय व्याकुल रहता था । परन्तु उस समय देश के नवयुवकोंमें वे भाव नहीं थे । आज

तुम लोग उस भावसे प्रेरित होकर आये हो। माता के कष्ट ने पुत्रों के हृदय को विचलित किया है। अब मुझे आशा है कि माता के कष्टों का अन्त अवश्य होगा। भाई। तुम जिस पद से मुझे विभूषित करते हो मैं तो उस पद के योग्य नहीं हूँ पर इतना मैं कहता हूँ। विश्वास रक्खो, कि माताके लिये प्राण देनेमें सबसे पहले मैं अपना बलिदान दूँगा। वीरो! आज हमारे देशके भूखे बालकोंका करुण-चीत्कार कृषक मंडली का हाहाकार और पद-दलित भारतमाता का भीषण प्रलाप हमारा उपहास कर रहा है। देशमें दरिद्रता का भीषण ताण्डव नृत्य हो रहा है। भारतके होनहार निरपराध युवक फांसी पर बिना प्रमाण के लटकाये जा रहे हैं। अन्यायी, अत्याचारी नौकरशाही नाना प्रकार का अत्याचार भारतवासियो पर कर रही है। भाईयों! क्या अब भी तुम लोग चुपचाप बैठ २ अत्याचार सहते रहोगे?

रवि—नहीं, कभी नहीं।

सरदार—तो आओ। आज हम सब लोग भारत माता की इस प्रतिमा के आगे प्रतिज्ञा करें कि हम सब लोग मिलकर माता को कष्ट से छुड़ाने के लिये जीवन पर्य्यन्त कोशिश करेंगे।

शेर—हम माता की प्रतिमा को साक्षी करके प्रतिज्ञा करते हैं कि हम तन, मन एवं धन से माता के कष्टों को दूर करने की चेष्टा करेंगे और यदि असफल हुए तो माता के चरणों पर अपना जीवन निसार कर देंगे।

गौरी—और हम भी प्रतिज्ञा करते हैं कि यदि ऐसा न कर सके तो पृथ्वी माता की गोद में सो जायेंगे।

सरदार—प्रतिज्ञा करो कि प्राण चले जांय, पर तिस पर भी अपने दल का भेद किसी से न कहेंगे।

सब लोग—हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि प्राण जाने पर भी दल का भेद किसी से भी नहीं कहेंगे।

मदन—चाहे हम जीते जी अग्नि में जला दिये जांय, चाहे हम सूली पर लटका दिये जांय, चाहे हम गरम तेल के कड़ाह में डाल दिये जांय, हमें संसार का भीषण से भीषण दण्ड क्यों न दिया जाय परन्तु हम मुख से दल की कोई बात भी बाहर न निकालेंगे।

सरदार—(रक्त-ध्वज लेकर) प्रतिज्ञा करो कि प्राण देकर भी 'रक्त-ध्वज' के सम्मान की रक्षा करेंगे।

सब—हम प्राण देकर भी अपने प्यारे झंडे की सम्मान रक्षा करेंगे।

सरदार—वीरो! हर समय तुम्हें मरने के लिये प्रस्तुत रहना पड़ेगा।

सब—हम हर समय आपके इशारे पर प्राण देने के लिये प्रस्तुत हैं।

सरदार—तो आओ माता हम सबों की ओर आशापूर्ण कातर-दृष्टि से देख रही है, आओ! आज ही से, नहीं इसी क्षण से हम सब देशोद्धार के कार्य्य में संलग्न हो जाय। आज से प्रत्येक जङ्गल हमारा निवास स्थान होगा। पर्वत की प्रत्येक गुफा हमारा दुर्ग मातृभूमि का उद्धार हमारा ध्येय और बलिदान हमारा मार्ग होगा।

बाबाजी—तो फिर देर क्या है?

केदार—नहीं देर क्या है! प्यारे सरदार, आज आपको पाकर हृदय फूला नहीं समाता। आज आपने हमारे हृदय में जिस जीवनी

शक्ति का सञ्चार किया है उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता आपको पाकर हम धन्य हैं यह देश धन्य है और धन्य है यह दुःखिनी भारत माता अब हमें पूर्ण आशा है कि भारत के दुख अवश्य दूर हो जांयगे। वह देखो मुझे स्वतन्त्र भारत का चित्र दिखलाई दे रहा है।

(आवाज के साथ सीन का फटना, स्वतन्त्र भारत का चित्र दिखाई देना, भारतमाता का हाथ उठाकर आशीर्वाद देना 'क्रान्ति चिरञ्जीवी हो', 'स्वतन्त्र भारत की जय हो', 'वीर सरदार की जय हो' के नारे के साथ सबों का गाना—

उबल रहा है खून आज मां ! रणमें मुझे उतरने दे।
क्रुद्ध केसरी सा दहाड़ कर निर्भय अरि से लड़ने दे॥
प्यासी है तलवार आज यह इसे खून पी लेने दे।
शोणित सरिता से कृपाण को तृपा तीव्र हर लेने दे॥
होकर सिंह शत्रु गज गण को आज मुझे दहलाने दे
दीप शिखा बन रिपु पतङ्ग को पल पल राख बनाने दे॥
वैनतेय हो रिपु विषधर को प्रमुदित भक्षण करने दे।
रविकर होकर शत्रु निशा मद अन्धकार अब हरने दे॥
सकल विपक्षी पक्षी को मा ! बनकर बाज दबाने दे।
दावानल बन मुझे शत्रु दलवन को आज जलाने दे।
भिड़ जाने दे विद्रोही गण से मा ! अब भिड़ जाने दे।
क्रोधित इन आँखो के मुझको चिनगारी बरसाने दे॥

फड़क रही जो बांह उसे मनमाना शस्त्र चलाने दे।
काट काट रिपु शीश धड़ाधड़ भूपर आज गिराने दे॥
रणचण्डी दुर्गा को शोणित में अब नहलाने दे।
मुण्डमाल पहना पहना कर उत्सव आज मनाने दे॥

॥ अङ्क १ समाप्त ॥

(क्रमशः)

द्वितीय अङ्क छप रहा है

॥ प्रतीक्षा कीजिये ॥

PK
2098
R358
1920

Rakta dhvaja

[redacted]

PLEASE DO NOT REMOVE
CARDS OR SLIPS FROM THIS POCKET

UNIVERSITY OF TORONTO LIBRARY